Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

ISSN 2319-8648 | Impact Factor - 7.139 | Indexed (SJIF)

June 2020 Special Issue- 29 Vol. 1

Economical and Social Issues

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

17. निवडणुकीतील जनमत चाचण्यांची अपरिहार्यता 46
प्रा. गोंदकर टी.डी.
18. राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग : एक प्रशासकीय अध्ययन 48
प्रा. मुंडे ए.ए.
19. पंचायतराज संस्थांमधील विषय समिती प्रशासनाचा अभ्यास 50
डॉ. अशोक लक्ष्मणराव गोरे
20. आधुनिक स्त्रीवादी कविता आणि महिला अत्याचार संदर्भ : एक अभ्यास 52
प्रा. हारकर दत्तात्रय बद्रीनाथ
21. शैक्षणिक प्रशासन: उच्च शिक्षणाची संकल्पना, महत्त्व दृष्टिकोन 54
डॉ. नंदकुमार नारायणराव कुंभारीकर
22. डॉ. पंजाबराव देशमुख यांची सामाजिक विचारसरणी व कार्य : एक समाजशास्त्रीय अभ्यास 56
डॉ. मनिषा बालासाहेब देशमुख
23. महाराष्ट्रातील मृदा प्रकारचा भौगोलिक अभ्यास 58
डॉ. देशमुख एस.बी.
24. जनसहभाग : संकल्पना, प्ररूप आणि महत्त्व 61
प्रा.डॉ. चव्हाण पी.एल.
25. वस्तु व सेवा कर : करप्रणालीचा चिकित्सक अभ्यास 63
प्रा.डॉ. मधुकर आघाव
26. कुस्तीपट्टू मल्ल खाशाबा जाधव : ऑलिम्पिक पदक विजेती कामगीरी 65
डॉ विठ्ठल रामकिशन भोसले
27. समाचार माध्यम की भूमिका औरसमस्या 67
डॉ. के एम नागरगोजे
28. मीरा कांत का नाटक नेपथ्य राग : एक स्त्री विमर्श 69
डॉ. श्रीदेवी बाबुराव बिरादार
29. हिन्दी महासागर में चीन की उपस्थिती एवं भारत की सुरक्षा चुनौतिया 70
प्रा. सोनवणे जी.एन.
30. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासो मे मुस्लिम नारी की आर्थिक स्थिती 72
प्रा. मोहम्मद रऊफ इब्राहिम
31. जहीर कुरेशी की गज़लों में चित्रित राजनीतिक चेतना 75
भेडेकर एन.एस.

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue 29 , Vol. 1 June 2020 | Peer Reviewed SJIF | ISSN : 2319 - 8648 Impact Factor : 7.139

ज़हीर कुरेशी की ग़ज़लों में चित्रित राजनीतिक चेतना

भेडेंकर एन.एस.
सहाय्यक अधिव्याख्याता, हिंदी विभाग, कला,वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, गंगाखेड.ता.गंगाखेड.जि.परभणी

वर्तमान राजनीतिक परिप्रेक्ष्य को देखा जाए तो आज की राजनीति में अनेक प्रकार की विकृतियाँ पाई जाती है। आज राजनीति के क्षेत्र में सत्ता की लालसा, भ्रष्टाचार, स्वार्थ लिप्सा, दल-बदल की समस्या, विरोधी दल की भूमिका, सशक्त सरकार का अभाव, चुनावी वोट तंत्र की राजनीति, पैसों का प्रलोभन आदि विकृतियाँ अधिक मात्रा में पाई जाती है। मूलतः राजनीति यह सत्ता से संबंधीत है और सता जनता द्वारा प्रदान किये गए 'वोट' के आधार पर बहुमत प्राप्त दल ही सत्ता की खुर्सी पर विराजमान होता है। आज राजनीति के क्षेत्र में जो विभिन्न स्तरों पर बदलाव पाएँ जाते है, उनके चलते समाज जीवन पर भी उन बदलावों के परिणाम होते हुए दिखाई देते हैं। राजनीतिक क्षेत्र का समाज जीवन पर पड़ा हुआ प्रभाव जिसे अनेक साहित्यकारों ने अपने साहित्य के द्वारा अभिव्यक्ति प्रदान की है। काव्य के क्षेत्र में भी अनेक कवियों ने अपनी रचनाओं द्वारा वर्तमान राजनीतिक परिप्रेक्ष्य को यथतथ्यता के धरातल पर अभिव्यक्त किया है। वर्तमानकालीन अनेक गजलकारों की गजलों में राजनीतिक चेतना का प्रभावी चित्रण हुआ है। जिन में दुष्यंत कुमार, चन्द्रसेन विराट, डॉ.कुँवर बेचैन, भवानी शंकर, आदि गजलकारों की गजलों में भी राजनीतिक चिंतन के विविध आयाम चित्रित हुए है। जहीर कुरेशी भी इस पक्ष पर लिखनेवालों में अपवाद नही है। उनकी गजलों में राजनीतिक चिंतन के अनक पहलु पूर्णता के साथ उभरकर आए है। राजनीतिक क्षेत्र में पनपती विकृतियों तथा प्रभावों को गजलकार ने अपनी गजलों के द्वारा समाज में चेतना की दृष्टि से अभिव्यक्त करते हुए समाज जीवन तथा देश की राजनीति को एक नई राह की ओर ले जाने का प्रयास करते हुए दिखाई देते हैं।

वर्तमान समय में राजनीति में पनपती विकृति कई रुपों में उभरकर आती है। आम तौर पर राजनीतिक विकृति का प्रभाव आम समाज जीवन पर पडता हुआ आसानी से देखा जा सकता है। समाज जीवन को आपस में उलझा कर एक दूसरों के विरोध में खडा करना तथा अपना स्वार्थ साध लेने की कला आज के राजनेताओं के सिखाने की आवश्यकता नही है। स्वयं आग लगाकर दूर खडे देखना की कौन कैसे झूलंस रहे है यह तो विकृत प्रवृत्ति वाले राजनेता ही कर सकते हैं। इसी बात पर प्रकाश डालते हुए गजलकार कहते है-

> "जलते प्रश्नों की सियाही को,
> नल के नीचे धो रहे हैं घाव।"[i]

गजलकार ने वर्तमान में स्थित राजनीति की विकृति पर करारा प्रहार करते हुए आम जनों की स्थिति को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। गजलकार क इस शेर में 'घाव' यह आम जनता का प्रतीक बना है। ये वही आम जन है, जो राजनेताओं के बहकावे में आकर उनके द्वारा लगाई हुई आग में आपस में झुलस जाते है और स्वयं ही अपने घावों को साफ करने का प्रयास करते हैं। ऐसे समय इनके घाव साफ करने कोई राजनेता नही आता। वर्तमान राजनीति की यथार्थता को गजलकार ने समयसापेक्षता के धरातल पर अभिव्यक्ति प्रदान की है।

राजनीति में 'शह' और 'मात' का खेल कोई नया नहीं है। एक दूसरों के उपर हावी होने की होड के चलते कूटिल राजनीतिक दॉव-पेंचों का प्रयोग कर अपना स्वार्थ साधने वालों की आज कमी नही है। आज की राजनीति राजनीति के लिए नहीं अपितु स्वार्थ के लिए की जाती है। किसी भी तरह अपने विरोधियों को धूल चटाने के लिए हर संभव प्रयास किये जाते हैं। इसी बात पर कुछ इस प्रकार प्रकाश डला गया है-

> "इस राजनीति में भी बहुत दॉव-पेंच हैं,
> अब राजनीति के करिश्में भी बदल गए।"[ii]

यह बात सच है कि आज राजनीति का स्वरुप पुरी तरह बदल चुका है। आज की राजनीति में तात्विक नहीं अपितु स्वार्थ से प्रेरित पहलुओं पर ध्यान दिया जाता है। अपनी राहों की बाधाओं को हटाने के लिए आज राजनीति में साम, दाम, दंड, भेद आदि सभी का प्रयोग किया जाता है। इसी लिए गजलकार कहते है कि, आज की राजनीति के करिश्में भी बदले गए है।

गजलकार ने राजनीतिक चेतना के अंतर्गत उन सभी पहलुओं को अपनी पूर्णता में प्रकट करने का प्रयास किया है, जो राजनीति के साथ समाज जीवन को भी प्रभावित करते हैं। वर्तमान राजनीति का प्रभाव समाज पर प्रतिबिंबित पडता है। कई बार राजनीति समाज की धाराओं को भी अपने अनुकूल मोड देती है। चुनावों के समय अक्सर इस प्रकार की स्थितियाँ उभरकर आती है। किन्तु समय के साथ समाज जीवन में भी चेतना जागृति हो चुकी है। आम जनता का महत्वपूर्ण अधिकार है 'वोट' जिसका प्रयोग किसके पक्ष में करना है यह उनका अपना पुरा अधिकार है। जिसे वे अपने विवेक के अनुरुप प्रयोग करते हुए पाए जाते हैं। जिसकी अभिव्यक्ति 'समंदर ब्याहने आया नही है' में निम्न प्रकार हुई है

> "हम समझते हैं चुनावों के समय की किमत
> हम नहीं बच्चों की शैली में बहलने वाले"[iii]

गजलकार ने वर्तमान जनता में आई हुई जागृति को यहां प्रकट करने का प्रयास किया है। आज की आम जनता किसी के बहकावे में आकर अपने वोट के अधिकार का दूरुपयोग नही करती। सोच समझकर अपने अधिकार का प्रयोग करते हुए देखी जा सकती है।

वर्तमान राजनीति तथा आम जनता का आज किसी प्रकार का कोई सरोकार दिखाई नहीं देता। एक वार चुनाव में 'वोट' देने के लिए जनता तथा जित प्राप्त करने के उपरांत राज करने के लिए नेता। यही स्थिति वनी हुई दिखाई देती है। इसी बात पर प्रकाश डालते हुए गजलकार कहते हैं–

"राज करने के लिए नेता हुए,
वोट देने भर को जनता हो गई!"[iv]

स्पष्ट है कि जहीर कुरेशी ने अपनी गजलों के द्वारा वर्तमान राजनीतिक परिप्रेक्ष्य को यथतथ्यता के धरातल पर अभिव्यक्त करते हुए राजनीति में पनपति विकृतियों पर कठोर प्रहार करते हुए युग की सच्चाई को सामने रखने का प्रयास किया है।

जनता चुनाव के द्वारा अपने नेता को चुनती है तथा वह नेता जनता का प्रतिनिधि बनकर सदन में पहुँच जाता है। किन्तु वर्तमान राजनीति के क्षेत्र में कुछ ऐसी भी विडम्बनाएँ पाई जाती है, जहॉ पर जनता ने जिस नेता को नहीं चुना वे नेता भी सदन में पहुँचे हुए देखे जा सकते हैं। वर्तमान राजनीति की यह एक बहुत बड़ी विडम्बना ही है कि, जिसे जनता ने खारिज किया वह रास्ता बदल कर सदन तक जाता है। गज़लकार जहीर कुरेशी जी के शब्दों में–

"जिन्हें 'जनता' ने खारिज कर दिया था
'सदन' में आ गए 'रस्ते' बदल कर!"[v]

संविधानीक रुप से जनता को अपना 'नेता' चुनने का अधिकार है, पर विडम्बना की बात यह है कि, जो नेता चुने नहीं गए वे नेता अपनी सत्ता तथा खुर्सी की लालसा को पुरा करने हेतु रास्ते बदलकर सदन में दिखाई देते हैं। इस प्रकार की स्थितियों पर गज़लकार ने कठोर प्रहार किये हैं।

वर्तमान राजनेताओं द्वारा चुनावी समय में दिये गए आश्वासन कितने सच होते हैं यह भी आज सोचने की आवश्यकता है। हर बार चुनाव के समय में जनता को नए–नए सपने दिखाएँ जाते हैं, उन्हे उनकी समस्याओं से छुटकारा पाने हेतु आश्वासन दिये जाते हैं। पर, आज तक किने नेताओं ने दिये हुए वादे या आश्वासन पुरे किये यह भी सोचने की आवश्यकता है। आम जनता आश्वासनों के भुलावे में आकर उनसे आंस लगाएँ बैठती है। क्या उनकी अपेक्षाएँ पुरी हो पाती है ? यह प्रश्न महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार की स्थिति गज़लकार की गजलों में निम्न प्रकार उभरकर आई है–

"वोट के बदले आश्वासन मिले,
भोले लागों की अपेक्षा बढ़ गई!"[vi]

'आप मुझे 'वोट' दो मैं आपकी समस्याएँ दूर करुँगा!' इस प्रकार के आश्वासन हर चुनव से पहले कई वार नेताओं द्वारा सुने जा सकते हैं, पर उनके द्वारा दिये गए आश्वासनों की पुर्ति तथा भोली जनता की अपेक्षाएँ कितनी मात्रा में पुरी होती है। यह यकिनन एक चिंतन का प्रश्न है।

वर्तमान समय में दल–बदल की राजनीति की समस्या अनेक दलों के सम्मुख है। इस पर प्रतिबंध लगाने हेतु 'दल–बदल विधेयक' भी पारित किया गया है। पर दलों को बदलने वालों पर इसका किसी प्रकार का प्रभाव दिखाई नहीं देता। जिस दल में उम्मिद की किरणे दिखाई देती है, स्वार्थी प्रवृत्ति के नेता उसी दल की ओर अपना रुख करते हुए पाएँ जाते हैं। वर्तमान राजनीति के क्षेत्र में इस प्रकार की दल–बदल की राजनीति पर प्रकाश डलते हुए गजलकार कहते हैं–

"उनके दल की नीति से मिलते न थे अपने विचार,
अब तो लगात है–हम बेकार में शामिल हुए!"[vii]

स्वार्थ यह आज की राजनीति में पग–पग पर पाया जाता है। इसी स्वार्थ के कारण कुछ नेता अपने दल को छोड किसी दूसरे दल का दामन थाम लेते हैं। जहां पर उन्हें अपने दल के विचार, संहिता आदि सब कुछ छोड कर नए दल की विचाराधारा को अपनाना पड़ता है। पर वहां पर जाने के उपरांत भी उनकी स्वार्थलिप्सा पुरी नहीं हो पाती तो, उनके सम्मुख पश्चाताप के अलावा दूसरी कोई राह शेष नहीं रहती। सच्चाई यह है कि कई नेता इन स्थितियों का सामना करते हुए 'घर वापसी' करते हुए भी पाएँ जाते हैं।

राजनीति का अंतीम छोर सियासत प्राप्ति है। इसके लिए एक दूसरों पर वार–पलटवार भी किया जाता है, यह बात राजनेताओं के लिए कोई नई नहीं है। अपने बयानों द्वारा दूसरों पर आरोप–प्रत्यारोप करना तथा दूसरों के आरोप–प्रत्यारोपों को झुठा साबित करना यह आज की राजनीति में आम बात बन चुकी हैं। अपने बयानों द्वारा एक–दूसरों को जनता के सम्मुख नीचा दिखाकर अपनी साख जनता की नजर में ऊँची करने के प्रयास आज की विकृत राजनीति का एक प्रमुख पहलु बन चुका है। जिसके चलते अपने विरोधियों को पस्त करने के हरसंभव प्रयास किए जाते हैं। इसी प्रकार की स्थितियों की अभिव्यंजना जहीर कुरेशी के 'रास्तों से रास्ते निकले' ग़जल संग्रह में निम्न प्रकार हुई है–

"राज–नेता 'बयानों' के आदी हुए
रोज उन पर पलटवार होने लगे"[viii]

वर्तमान राजनीतिक परिप्रेक्ष्य को देखा जाए तो यहीं कहा जा सकता हैं कि, आज की राजनीति स्व–स्वार्थपरकता के लिए ही अधिक की जाती है। जिसमें एक दूसरों के उपर अपने बयानों द्वारा आरोप–प्रत्यारोप किए जाते हैं, एक दूसरों को

जनता के सम्मुख नीचा दिखाने का प्रयास किया जाता है। वर्तमान राजनीति में इस प्रकार की स्थितियॉ आम रुप में पाई जाती हैं। जिसकी अभिव्यक्ति गजलकार की गजलों में यथार्थ की धरातल पर हुई है।

अपना रास्ता साफ करने के लिए विरोधियों पर आरोप गढकर उन्हें विचलीत करना तथा जनता के सम्मुख नीचा देखने पर विवश करना यह आज की राजनीति में आम बात बन गई है। गजलकार ने अपनी गजलों के द्वारा राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में निहीत वास्तविकता को यथातथ्यता के धरातल पर अभिव्यक्त कर वर्तमान राजनीति की वास्तविकता को हमारे सम्मुख रखने का प्रयास किया है। वर्तमान राजनीति में पनपति विकृतियों प्रकाश डालते हुए वे कहते हैं–

"राजनीति गढती रही, नित्य नए आरोप,
'छोटे मुँह' जडने लगे, बडे–बडे आरोप!"[ix]

स्पष्ट है कि, राजनीति की गलियारों में नित्य–नए आरोप जडने का कार्य किया जाता है। अपना रास्ता साफ करने हेतु आज की राजनीति में इस प्रकार की स्थितियों का पाया जाना आम बात है। इस प्रकार की विकृत स्थितियों पर गजलकार कठोर प्रहार करते हुए देखे जा सकते हैं।

राजनीति तथा सत्ता का अनन्य साधारण संबंध होता है। सत्ता प्राप्ति के लिए राजनीति के रास्ते होकर ही सत्ता की कुर्सी पर विराजमान हो सकते हैं। किन्तु वर्तमान राजनीतिक परिप्रेक्ष्य को देखा जाए तो आज राजनीतिक क्षेत्र में किसी भी दल को सत्ता स्थापन करने के लिए अनुकूल जनादेश प्राप्त होता हुआ नहीं दिखाई देता। परिणामतः वर्तमान राजनीति के क्षेत्र में बिना गठजोड के सत्ता स्थापन करना संभव नहीं। यहीं वह कारण है जिसके चलते वर्तमान राजनीति में जो एक दूसरों के मुखर विरोधी रहें वे सत्ता का दामन हथियाने के लिए अपनी विचाराधाराओं से समझौता करते हुए भी देखे जा सकते हैं। इन स्थितियों पर प्रकाश डालती जहीर कुरेशी की निम्न पंक्तियॉ दृष्टव्य है–

"बिना 'गठजोड' अब सत्ता नहीं संभव
हमारे युग की जनसत्ता भी बदली है"[x]

गजलकार ने वर्तमान राजनीतिक परिप्रेक्ष्य की वास्तविकता को प्रकट करते हुए वर्तमान राजनीति में दलों की स्थितियों पर भी प्रकाश डाला हैं। आज कोई भी दल स्वयं के बलबूते पर पूर्ण जनादेश प्राप्त करने में सफल नहीं हो रहे हैं। परिणामतः सत्ता की सुंदरी से वंचित रहने के आसार अधिक बनने लगे हैं। किन्तु वर्तमान राजनीति मे तथा राजनेताओं में पनपती हुई सत्ता प्राप्ति की लालसा प्रबल है, जिसके चलते वे अपनी विचाराधाराओं से भी समझौता करते हुए विभिन्न दलों का गठजोड कर सत्ता स्थापित करते हुए देखे जा सकते हैं। जिस पर गजलकार ने यथतथ्यता के धरातल पर प्रकाश डाला हैं।

अंततः गजलकार जहीर कुरेशी की गजलों में चित्रित राजनीतिक चेतना के संदर्भ में हम यहीं कह सकते हैं कि गजलकार ने वर्तमान राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में पनपती विकृतियों के साथ सत्ता प्राप्ति के लिए राजनेताओं के बीच की होड को यथतथ्यता की धरातल पर अभिव्यक्ति प्रदान करते हुए राजनीति की चक्की में पिसती आम जनता, चुनावी दॉव–पेंच, आरोप–प्रत्यारोपों की राजनीति, स्वार्थ हेतु बनाए जानेवाले गठबंधन आदि पहलुओं को समय सापेक्षता की धरातल पर वाणी प्रदान की है।

संदर्भ

---

[i] एक टूकडा धूप, जहीर कुरेशी, पृ.40
[ii] चॉदनी का दुःख, जहीर कुरेशी, पृ. 116
[iii] समंदर ब्याहने आया नहीं है, जहीर कुरेशी, पृ. 32
[iv] भीड में सबसे अलग, जहीर कुरेशी, पृ. 41
[v] पेड तनकर भी नहीं टूटा, जहीर कुरेशी, पृ. 94
[vi] बोलता है बीज भी, जहीर कुरेशी पृ.70
[vii] निकला न दिग्विजय को सिकंदर, जहीर कुरेशी, पृ. 60
[viii] रास्तों से रास्ते निकले, जहीर कुरेशी, पृ. 95
[ix] दोहों से दोहा–गजलों तक, जहीर कुरेशी पृ. 115
[x] जिन्दगी से बडा जिन्दगी का समर, जहीर कुरेशी पृ. 29